Downloaded from: justpaste.it/77tis

Vinayak Damodar Savarkar Essay in Hindi

विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 1883 में हुआ था और उन्होंने अपना जीवन एक भावुक कार्यकर्ता और भारतीय क्रांतिकारी के रूप में बिताया। उन्होंने अभिनव भारत सोसाइटी और फ्री इंडिया सोसाइटी की स्थापना की।
उन्हें स्वातंत्र्यवीर सावरकर के नाम से जाना जाता था।
एक लेखक के रूप में, उन्होंने 'द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस' शीर्षक से एक टुकड़ा भी लिखा, जिसमें 1857 के भारतीय विद्रोह के संघर्षों के बारे में शानदार विवरण शामिल थे।

Short Essay on Vinayak Damodar Savarkar in Hindi

सावरकर एक महान देशभक्त, विद्वान, कवि और एक लेखक थे।
उन्होंने अपने छात्र जीवन में ही देशभक्ति की गतिविधियाँ शुरू कर दीं।
16 साल की उम्र में उन्होंने अभिनव भारत की स्थापना की।
सावरकर को जन्मजात क्रांतिकारी कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।
उन्हें बीए से सम्मानित नहीं किया गया था।
डिग्री, जिसे उन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे से पास किया।
उन्हें उनकी राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए गिरफ्तार किया गया और जेल में डाल दिया गया।
जब उन्हें मुकदमे का सामना करने के लिए इंग्लैंड से भारत लाया जा रहा था, तो उन्होंने जहाज से समुद्र में छलांग लगा दी और फ्रांसीसी क्षेत्र में तैर गए।
यह वीरता का एक अभूतपूर्व और अद्वितीय कार्य था और ऐसे कई वीर कार्यों के लिए उन्हें वीर अर्थात बहादुर कहा जाता है।
सावरकर ने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें भारत की स्वतंत्रता का इतिहास प्रमुख है।
सावरकर इंग्लैंड में अपने प्रवास के दौरान दुनिया के कई क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। वे स्वयं क्रान्तिकारी व्यक्ति थे।
उन्होंने भारतीयता के कारण का भी समर्थन किया।
अंग्रेजों के हाथों सावरकर को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उनके साहस और उनकी भक्ति ने कभी झंडोत्तोलन नहीं किया। उनका नाम भारतीय इतिहास के पन्नों में अमर हो गया है।

Essay on Vinayak Damodar Savarkar in Hindi

विनायक दामोदर सावरकर भारत के उत्कट स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे।
लेकिन, वह सिर्फ एक स्वतंत्रता सेनानी नहीं थे।

वह एक साहसी योद्धा, अच्छे वक्ता, विपुल लेखक, कवि, इतिहासकार, दार्शनिक, सामाजिक कार्यकर्ता, सतर्क नेता, बार्ड और स्वतंत्रता के कट्टर समर्थक और भी बहुत कुछ थे।

उनका जन्म 28 मई 1883 को नासिक जिले के भागलपुर में हुआ था।

उन्होंने अपनी युवावस्था ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ते हुए बिताई।

एक अत्यंत प्रतिभाशाली, मुखर और आत्मविश्वास से भरे स्कूली छात्र के रूप में, वह अपने शिक्षकों और दोस्तों के बीच प्रसिद्ध थे।

१८९८ में, जब चापेकर भाइयों को एक ब्रिटिश अधिकारी की हत्या के लिए फांसी दी गई थी-
सावरकर सिर्फ १५ वर्ष के थे।

लेकिन, चापेकर की शहादत ने उन्हें प्रभावित किया और उन्होंने देश की आजादी को अपना प्रमुख लक्ष्य बना लिया।

1901 में मैट्रिक के बाद उन्होंने पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज में प्रवेश लिया।

हालाँकि, वह ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता में अधिक रुचि रखते थे।

पूना में युवा कॉलेज के छात्र देशभक्तों और बाल गंगाधर तिलक, भोपाटकर और अन्य जैसे राजनीतिक नेताओं के भाषणों से प्रभावित थे।

पूना के समाचार पत्र भी समाज में ब्रिटिश विरोधी माहौल बनाने और समाज की राष्ट्रवाद की भावनाओं को अपील करने में सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे। सावरकर इस आंदोलन में युवाओं के बेताज नेता थे।

उन्होंने केवल ग्यारह वर्ष की उम्र में बच्चों की एक वानरसेना (बंदर ब्रिगेड) का आयोजन किया।

एक निडर व्यक्ति, वह चाहता था कि उसके आस-
पास का हर कोई शारीरिक रूप से मजबूत हो और किसी भी आपदा- प्राकृतिक या मानव निर्मित का सामना करने में सक्षम हो।

उन्होंने महाराष्ट्र में अपने जन्मस्थान नासिक के आसपास लंबी यात्राएं, लंबी पैदल यात्रा, तैराकी और पर्वतारोहण किया।

अपने हाई स्कूल के दिनों के दौरान, वे शिवाजी उत्सव और गणेश उत्सव का आयोजन करते थे, जिसे तिलक (जिन्हें सावरकर अपना गुरु मानते थे) द्वारा शुरू किया गया था और इन अवसरों का उपयोग राष्ट्रवादी विषयों पर नाटकों को प्रस्तुत करने के लिए करते थे।

उन्होंने लोगों को प्रेरित करने के लिए कविता, निबंध, नाटक आदि लिखना शुरू किया, जिसे उन्होंने एक जुनून के रूप में विकसित किया था।

1905 में, उन्होंने आयातित कपड़े के खिलाफ भारत के विरोध के प्रतीक के रूप में आयातित कपड़े को जला दिया।

मई 1904 में, उन्होंने 'अभिनव भारत' नाम से एक अंतर्राष्ट्रीय क्रांति संस्थान की स्थापना की।

उनके भड़काने वाले देशभक्तिपूर्ण भाषणों और गतिविधियों ने ब्रिटिश सरकार को चिढ़ाया।

नतीजतन, सरकार ने उनकी बीए की डिग्री वापस ले ली।

जून 1906 में वे बैरिस्टर बनने के लिए लंदन चले गए।

हालाँकि, लंदन में, उन्होंने एकजुट होकर इंग्लैंड में भारतीय छात्रों को अंग्रेजों के खिलाफ भड़काया।

उन्होंने विदेशी शासकों के खिलाफ हथियारों के इस्तेमाल में विश्वास किया और हथियारों से लैस इंग्लैंड में भारतीयों का एक नेटवर्क बनाया।

हालाँकि उन्होंने इंग्लैंड में बैरिस्टर परीक्षा उत्तीर्ण की, फिर भी उनकी सरकार विरोधी गतिविधियों के कारण, उन्हें डिग्री से वंचित कर दिया गया।

Long Essay on Vinayak Damodar Savarkar in Hindi

वीर सावरकर का जीवन परिचय

विनायक दामोदर सावरकर न केवल एक क्रांतिकारी थे, बल्कि एक भाषाविद्, बुद्धिजीवी, कवि, अटल क्रांतिकारी, कट्टर राजनीतिज्ञ, समर्पित समाज सुधारक, दार्शनिक, द्रष्टा, महान कवि और महान इतिहासकार और सत्ता के वक्ता भी थे। इन्हीं गुणों ने उन्हें महानतम लोगों में सर्वोच्च पद तक पहुँचाया।

वीर सावरकर का पूरा नाम विनायक दामोदर सावरकर था।

ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत की आजादी के लिए लड़ने वाले विनायक दामोदर सावरकर को आमतौर पर वीर सावर कर के नाम से जाना जाता था।

वीर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को नासिक के भगूर गांव में हुआ था।

उनके पिता दामोदरपंत गांव के प्रतिष्ठित लोगों में जाने जाते थे।

विनायक जब नौ वर्ष के थे तब उनकी माता राधाबाई का देहांत हो गया।

विनायक दामोदर सावरकर 20वीं सदी के सबसे महान हिंदूवादी थे। उन्हें हिंदू शब्द बहुत प्रिय था।

वह कहते थे कि उन्हें स्वतंत्रता सेनानी की जगह हिंदू संगठनकर्ता कहा जाना चाहिए।

वीर सावरकर ने जीवन भर हिंदू हिंदी हिंदुस्तान के लिए काम किया।

वे छह बार अखिल भारतीय हिंदू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए।

1937 में उन्हें 'हिंदू महासभा' का अध्यक्ष चुना गया और 1938 में हिंदू महासभा को एक राजनीतिक दल के रूप में घोषि त किया गया।

1943 के बाद दादर, मुंबई में रहे। बाद में वे निर्दोष साबित हुए और राजनीति से सेवानिवृत्त हो गए।

वीर सावरकरी की शिक्षा

वीर सावरकर ने 1901 में शिवाजी हाई स्कूल नासिक से मैट्रिक की परीक्षा पास की। वह बचपन से ही नटखट था।

उन्होंने बचपन में कुछ कविताएँ भी लिखीं।

फर्ग्यूसन कॉलेज पुणे में पढ़ते हुए भी वे देशभक्ति से भरे जोरदार भाषण देते थे।

1910 ई., जब वे विलायत में कानून की पढ़ाई कर रहे थे।

मुझे एक हत्या के मामले में समर्थन के रूप में जहाज से भारत भेजा गया था।

क्रांतिकारी संगठन की स्थापना

1940 ई. में, वीर सावरकर ने पूना में 'अभिनव भारती' नामक एक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की, जिसे आवश्यकता पड़ने पर बल प्रयोग द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करना था।

स्वतंत्रता के लिए कार्य करने के लिए उन्होंने एक गुप्त समाज का गठन किया था, जिसे 'मित्र मेला' के नाम से जाना जाता है।

सावरकर जेल की दीवारों पर बिना पेन-पेपर के पत्थर के टुकड़ों से कविताएँ लिखने वाले पहले कवि थे।

कहा जाता है कि उन्होंने अपनी दस हजार से अधिक पंक्तियों को प्राचीन वैदिक साधना के रूप में वर्षों स्मृति में तब तक रखा जब तक कि वे किसी तरह देशवासियों तक नहीं पहुंच गईं।

सावरकर का संघर्ष

1910 में, वीर सावरकर को एक हत्या के समर्थन के रूप में एक जहाज द्वारा भारत भेजा गया था।

लेकिन वे समुद्र में कूद गए और फ्रांस के मार्सलेस बंदरगाह के पास जहाज से भाग निकले, लेकिन फिर से पकड़े गए औ र भारत लाए गए। भारत की आजादी के संघर्षों में वीर सावरकर का नाम बहुत महत्वपूर्ण रहा है।

महान देशभक्त और क्रांतिकारी सावरकर ने अपना पूरा जीवन देश को समर्पित कर दिया।
सावरकर जहां अपने राष्ट्रवादी विचारों से देश को स्वतंत्र बनाने के लिए संघर्ष करते रहे वहीं दूसरी ओर उनका जीवन देश की आजादी के बाद भी संघर्षों से घिरा रहा।

वीर सावरकर की जेल यात्रा

उनके अभियोग पर एक विशेष अदालत ने सुनवाई की और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।
सावरकर 1911 से 1921 तक अंडमान जेल (सेलुलर जेल) में रहे।
वे 1921 में घर लौटे और फिर 3 साल जेल में बिताए।
1937 ई. में वे आजाद हुए, लेकिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उनका समर्थन नहीं मिल सका,
1947 में उन्होंने भारत के विभाजन का विरोध किया।
महात्मा रामचंद्र वीर (हिंदू महासभा के नेता और संत) ने उनका समर्थन किया।
और 1948 ई. में, उन पर महात्मा गांधी की हत्या में भूमिका निभाने का संदेह था।
इतनी मुश्किलों के बाद भी वो नहीं झुके और उनकी देशभक्ति बरकरार रही और कोर्ट सभी आरोपों से बरी हो गया.
मातृभूमि! मैंने पहले ही आपके चरणों में अपना मन लगा दिया है।
यह मानते हुए कि देश सेवा में भगवान की सेवा है, मैंने आपकी सेवा के माध्यम से भगवान की सेवा की। वीर सावरकरी

वीर सावरकरी की मृत्यु और सम्मान

सावरकर एक प्रख्यात समाज सुधारक थे।
उनका दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक और सार्वजनिक सुधार समान हैं और एक दूसरे के पूरक हैं।

- *सावरकर जी का निधन 26 फरवरी 1966 को मुंबई में हुआ था।*
- *1966 में वीर सावरकर की मृत्यु पर, भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया है।*
- *उस समय हमारे देश में राजनीतिक अस्थिरता शुरू हो रही थी और लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद इंदिरा गांधी देश की नई प्रधानमंत्री बनीं।*
- *यह सम्मान वीर सावरकर को उनके राजनीतिक विद्रोहियों को जवाब देने के लिए ही दिया गया था।*
  अहिंसा के पुजारी के रूप में, यह भारत में हमारा एकमात्र देश हो सकता है जहां राष्ट्रपिता की हत्या के दो आरोपियों को मौत की सजा दी जाती है और एक को राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया जाता है।
- *पोर्ट ब्लेयर के हवाई अड्डे का नाम उनके नाम पर वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा रखा गया है।*